IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कला और शिल्प के संदर्भ में भारतीय त्योहारों और सांस्कृतिक उत्सवों की भूमिका

1. डॉ0 इंदु रावत 2. डॉ0 कृपाल सिंह
सहायक प्रोफेसर (शिक्षा विभाग),
हे.न.ब. गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय, बी.जी.आर परिसर, पौड़ी गढ़वाल।

सारांश

भारत अपनी विविध और जीवंत संस्कृति के लिए जाना जाता है । भारतीय लोक कला और शिल्प भारतीय संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा है जिसकी झलक इसकी परंपराओं, रीति–रिवाजों, अनुष्ठानों, त्यौहार एवं उत्सव में दिखाई पड़ती है| भारत विभिन्नताओं का देश है और यहां का कला– शिल्प अपनी अद्भुत विभिन्नता के लिए प्रसिद्ध है। कला और शिल्प की इस विभिन्नता को बनाए रखने में यहां के त्योहार तथा सांस्कृतिक उत्सवों की विशेष भूमिका होती है जिससे यह पारंपरिक कौशल पीढ़ियों तक आगे बढ़ते रहते हैं ।

मुख्य शब्द– कला रूप, शिल्प, संस्कृति, भारतीय त्योहार, सांस्कृतिक उत्सव

कला एक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है जो सौंदर्य, भावना, और विचारों को व्यक्त करती है। तथा शिल्प हस्तनिर्मित वस्तुओं का निर्माण है जिसमें कौशल और तकनीक का उपयोग होता है। किसी भी देश के विकास में कला और शिल्प का विशेष योगदान होता है क्योंकि, यह समुदाय, समाज व देश के विचारों और भावनाओं को भौतिक माध्यम के द्वारा रचनात्मकता के साथ व्यक्त करता है। कला और शिल्प एक साझा दृष्टिकोण, मूल्य, प्रथा एवं एक निश्चित लक्ष्य को प्रदर्शित करते हैं। भारतीय लोक कला और शिल्प भारतीय संस्कृति का एक अनिवाय हिस्सा है जो इसकी परंपराओं, रीति– रिवाजों, अनुष्ठानों आदि में परिलक्षित होकर इसको अद्भुत, विविधतापूर्ण और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्रदान करते हैं। भारतीय त्योहार और लोक उत्सव इसकी अद्भुत संस्कृति को आगे बढ़ाने में संवाहक का कार्य करते हैं।

त्योहार और उत्सव कलात्मक परंपराओं को बनाए रखने और उन्हें बढ़ावा देने में एक अपूरणीय भूमिका निभाते हैं। भारत सामाजिक सांस्कृतिक विविधता वाला देश है और यही विविधता इसके त्योहार और उत्सवों में दिखाई पड़ती है स विभिन्न धर्म, समाज, समुदाय और संस्कृति में अपने–अपने तरीके से त्योहारों को मनाया जाता है जिसके कारण भारतीय त्योहारों पर स्थानीय कला व लोक परम्परा दर्शनीय होती है। त्योहारों की खूबसूरती की कल्पना स्थानीय कला के बिना नहीं की जा सकती है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में त्योहारों और उत्सवों में लोकगीत, लोकनृत्य, चित्रकला, स्थानीय शिल्प, पारंपरिक हस्तशिल्प आदि कलाओं की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता दिखाई पड़ती हैं ।

लोकगीतः लोक में विख्यात,लोक द्वारा निर्मित लोक के लिए लिखे गीतों को लोकगीत कहा जाता है, जिसे कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है। यह हमारे जीवन की विकास की गाथा है जिसमें सुख–दुख, मिलन, विरह,उतार–चढ़ाव,भक्ति,प्रेम करुणा और उत्साह की भावना व्यक्त होती है । भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न भाषाओं और बोलियों में लोक संगीत गया जाता है जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी ध्वनि,वाद्य– यंत्र और परंपराएं हैं । त्योहार और उत्सवों की पारंपरिक परंपराओं को बनाए रखने में लोकगीत विशेष भूमिका निभाते हैं । लोकगीतों के माध्यम से ही त्योहार व उत्सवों को खूबसूरत और यादगार बनाया जाता है ।

राजस्थान का लोकप्रिय घूमर लोक गीत गणगौर या तीज– त्योहारों के अवसर पर स्त्रियों द्वारा घूमर नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत है जिसके माध्यम से नायिका अपने प्रियतम से श्रृंगारिक साधनों की मांग करती है । इसी तरह से रसिया, पंछिड़ा, लोटिया और पिपली लोकगीत राजस्थान के त्योहारों पर गाए जाते हैं । लोटिया गीत चैत्र महीने में मनाए जाने वाले लोटिया त्यौहार के दौरान गया जाता है इस गीत को गाते हुए महिलाएं माथे पर पानी से भरा लोटा लेकर आती है। पिपली लोकगीत राजस्थान के शेखावटी और मारवाड़ क्षेत्र में तीज के त्यौहार पर गया जाता है। जिसमें पत्नी अपने पति को परदेस से घर वापस आने को कहती है।

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में मनाया जाने वाली कजरी महोत्सव में प्रसिद्ध लोकगीत एवं लोक नृत्य कजरी की प्रस्तुति दी जाती है यह लोकगीत उत्तर प्रदेश व बिहार के भोजपुरी क्षेत्रों में वर्षा ऋतु का वर्णन, विरह वणन तथा राधा कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए गया जाता है । उत्तर प्रदेश की होली पूरे देश में प्रसिद्ध है यहां की होली की रंगत को बढ़ाने के लिए प्रसिद्ध होरी लोकगीत गाए जाते हैं जो राधा कृष्ण की कहानियों पर आधारित होते हैं।

असम में बोहाग बिहू (बसंत महोत्सव), कार्तिक बिहू ,माघ बिहू त्योहारों पर बिहू लोकगीत के साथ बिहू लोक नृत्य करने की परंपरा है । बिहू लोक गीत प्रकृति, सामाजिक संदेश और प्रेम से जुड़ा होता है।

उत्तराखंड में त्योहारों पर बसंती लोकगीत, फूलदेई लोकगीत, विवाह समारोह में मांगल लोकगीत जो मूल रूप से पूजा गीत होते हैं गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त जागर लोकगीत अनुष्ठानों, देवी–देवताओं, परियों, स्वदेशी आत्माओं व भूतों के लिए गए जाते हैं ।

गुजरात में नवरात्रि के पावन उत्सव में गरबा नृत्य के साथ प्रसिद्ध गरबा लोकगीत गाए जाते हैं।

पंजाब में विवाह व शुभ अवसर पर खुशी से जुगनी, भांगड़ा लोकगीत गाए जाते हैं ।

लोक नृत्यः भारत की समृद्ध संस्कृति का एक प्रमुख हिस्सा इसका लोक नृत्य है। लोक नृत्य एक कला रूप है जो विभिन्न वाद्य यंत्रों की मंत्र मुग्ध कर देने वाली ध्वनि पर लयबद्ध शारीरिक अभ्यास के माध्यम से मूल लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। भारत के सुन्दर लोक नृत्यों की झलक यहां के विशेष अवसरों, समारोहों ,अनुष्ठानों, त्योहारों और उत्सवों में देखने को मिलती है।

गरबा और डांडियाः गुजरात के प्रसिद्ध लोक नृत्य है यह नवरात्रि के दौरान किए जाते हैं। इन नृत्यों से भक्त देवी दुर्गा को प्रसन्न करते हैं और उनका आर्शीवाद पाते हैं।

उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में होली के त्यौहार पर चरकुला नृत्य किया जाता है। इस नृत्य में घूंघट वाली महिलाएं अपने सिर पर बड़े गोलाकार लकड़ी के पिरामिड जिसमें 108 जलते हुए दीपक होते हैं को संतुलित करते हुए नृत्य करती हैं। यह नृत्य भगवान कृष्ण के गीतों पर किया जाता है । कृष्ण जन्मभूमि की होली हो अथवा बरसाना की लट्ठमार हुरंगा, चरकुला नृत्य के बिना होली की सतरंगी आभा अधूरी होती है।

रोशनी के त्योहार दीपावली को पूरा देश हर्षोल्लास के साथ मनाता है। इस पर्व के अवसर पर उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड विशेषकर चित्रकूट मोरपंख व दिवारी लोक नृत्य के लिए विख्यात है। आकर्षक वेशभूषा में किया जाने वाला यह नृत्य पूरी तरह से कृष्ण भक्ति को समर्पित है जिसमें प्रकृति और गोवंश के संरक्षण का संदेश दिया जाता है। मध्य प्रदेश के छतरपुर,दमोह,टीकमगढ़,आदि जिलां के ग्रामीण ग्वाले भी इस नृत्य का प्रदर्शन करते हैं।

छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र की मांड्या जनजाति द्वारा क्षेत्रीय त्योहारों पर गौर नृत्य सामूहिक रूप से किया जाता है इसमें पुरुष नृत्यकार रंगीन वस्त्र एवं सिर पर विशेष प्रकार का,गौर(भैंस) के दो सिंग वाला मुकुट पहनता है। महिला नृत्यांगना साधारण सफेद और लाल रंग के वस्त्र, सिर पर पीतल की मुकुट गले में मोहरी माला और पैरों में घुंघरू भी धारण करती हैं ।

घूमर नृत्य राजस्थान का प्रसिद्ध लोक नृत्य है जो गणगौर और नवरात्रि पर्व पर किया जाता है। यह मूल रूप से राजस्थान के मेवाड़.मारवाड़,जयपुर और बीकानेर क्षेत्रों में प्रचलित है। इस नृत्य में महिलाएं लंबा घूंघट निकालकर लंबे घाघरे पहनकर समूह में चक्कर काटते हुए अपनी ही धूरी पर गोल–गोल घूमती हैं ।

बिहार का झझिया लोक नृत्य जो कि नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है जिसमें महिलाएं घेरा बनाकर नृत्य करती हैं घरे के बीच में मुख्य नायिका सिर पर घड़ा लेकर खड़ी हो जाती है। घड़े के ऊपर लगे ढक्कन पर एक दीपक जलता रहता है सभी महिलाएं राजा चित्रसेन तथा उनकी रानी की कथा प्रसंग के आधार पर रचे गए गीतों को गाते हुए नृत्य करती हैं ।

असम में बोहाग बिहू (बसंत महोत्सव), कार्तिक बिहू, माघ बिहू, त्योहारों के अवसर पर बिहू लोक नृत्य किया जाता है। यह खुशी का नृत्य युवा पुरुषों और महिलाओं दोनों के द्वारा किया जाता है इसकी विशेषता फुर्तीली नृत्य मुद्राएं तथा हाथों की तीव्र गति है।

उत्तराखंड में पांडव नृत्य, झुमेला और जागर प्रसिद्ध लोक नृत्य त्योहार और उत्सवों पर किए जाते हैं। उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में खरीफ की फसल कटने के बाद एकादशी के दिन पारंपरिक पांडव नृत्य किया जाता है। यह नृत्य गढ़वाल क्षेत्र में उन जगहों पर किया जाता है जहां पांडवों ने अपने अस्त्र छोड़े थे । इस नृत्य शैली के माध्यम से पांडवों के जन्म और मृत्यु के चरणों को दर्शाया जाता है। गुरु पूर्णिमा, बैसाखी, दिवाली, मकर– संक्रांति, शादी और अन्य त्योहारों पर वाद्य यंत्रों की ध्वनि पर पारंपरिक प्रसिद्ध लोक नृत्य झुमेला किया जाता है ।भूत– प्रेतों और आध्यात्मिक पूजा के लिए उत्तराखंड में प्रसिद्ध पारंपरिक जागर लोक नृत्य अलग–अलग अनुष्ठानों में पारंपरिक वाद्य यंत्रों की ध्वनि पर किया जाता है। उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में शादी –बरात या अन्य शुभ अवसरों पर द्योलिया लोक नृत्य किया जाता है यह एक तलवार नृत्य है जो कुमाऊं की मार्शल परंपराओं और युद्ध में जीत के बाद जश्न का प्रतीक है।

झारखंड, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में दुर्गा पूजा, होली ,दिवाली आदि त्योहारों में छऊ लोक नृत्य प्रस्तुत करने की परंपरा है। यह नृत्य मार्शल आर्ट, लोक परंपरा और मंदिर अनुष्ठानों का मिश्रण है इस नृत्य में हिंदू पौराणिक पात्रों का चित्रण करने वाले मुखोटे और विस्तृत पोशाक पहनी जाती है।

पंजाब और हरियाणा राज्य में लोहड़ी त्यौहार पर भांगड़ा और गिद्दा लोक नृत्य किए जाते हैं । चित्रकलाः भारतीय त्योहारों में चित्रकला सजावट और सौंदर्य के रूप में दिखाई पड़ती है। दीपावली त्यौहार में घर के मुख्य द्वार पर तोरण लटका कर, मिट्टी के दीयों, रंगोली और लक्ष्मी पैर बनाकर घर की सजावट करने की परंपरा होती है। हाथों से फूलों की माला बनाकर लक्ष्मी– गणेश की मूर्तियों पर चढ़ायी जाती है।

जन्माष्टमी के अवसर पर कृष्ण की झांकी तैयार की जाती है। जमीन पर रंगों और बुरादों से रंगीन चित्र बनाए जाते हैं। भगवान कृष्ण के जन्म से संबंधित घटनाओं को अलग–अलग चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। वैसे तो पूरे देश में गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा और दिवाली मनाई जाती है और इन त्योहारों पर भगवान गणेश, माता लक्ष्मी और माता दुर्गा की मूर्तियों के निर्माण में भारत की अद्भुत चित्रकला की झलक दिखाई पड़ती है लेकिन मूर्ति कला की अद्भुत खूबसूरती गणेश चतुर्थी के अवसर पर महाराष्ट्र में भगवान गणेश और दुर्गा पूजा के अवसर पर पश्चिम बंगाल में माता दुर्गा की तरह–तरह की अद्भुत, भव्य और खूबसूरत, मूर्तियों और उनकी सजावट मैं देखने को मिलती है।

चित्रकला की अस्थाई शैली में ऐपण, अल्पना, रंगोली आदि को शादी–समारोह, त्योहार और उत्सव में सजावट के लिए प्रयुक्त किया जाता है । क्षेत्रीय भाषाओं मैं इसे अलग–अलग नाम से जाना जाता है। उत्तराखंड में जिसे ऐपड़ कहते हैं उसे ही राजस्थान में मंडवा, गुजरात में सत्तिया महाराष्ट्र में रंगोली बिहार में अरिपन मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में चौक पूरना और दक्षिण भारत में कोलम के नाम से जाना जाता है ।

चित्रकारी की स्थाई शैली में आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ की कलमकारी पेंटिंग जिसमें रामायण,महाभारत जैसे महाकाव्यों का चित्रण किया जाता है । उड़ीसा की पट्टचित्र कला में रामायण, महाभारत, कृष्ण गाथा और भागवत गीता के प्रकरण माता दुर्गा, भगवान गणेश, पेड़, पक्षियों और जानवरों को चित्रित किया जाता है। महाराष्ट्र की वारली चित्रकला में सामाजिक अनुष्ठानों, दैनिक –जीवन और प्रकृति को दर्शाया जाता है। बिहार की मधुबनी पेंटिंग जिसमें हिंदू धार्मिक रूपांकनों और सूर्य चंद्रमा जैसी प्राकृतिक वस्तुओं और हिंदू देवी– देवताओं को चित्रांकन किया जाता है। चित्रकारी की ये सभी शैलियां त्योहारों, अनुष्ठानों, पर्वो या उत्सवों में सौंदर्य या सजावट के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं।

सांस्कृतिक उत्सवः भारत में अनेक लोक उत्सव कला और शिल्प को प्रोत्साहित एवं संरक्षित करते हैं जिनमें से कुछ निम्न हैं :–

ताज महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष फरवरी माह में उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक शहर आगरा में कला,संस्कृति और विरासत के भव्य प्रदर्शन के लिए किया जाता है. इस उत्सव में मुख्यतः मुगल शिल्पकारी के उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई जाती है जिसमें बनारसी साड़ी, चिकनकारी, जरदोजी, मधुबनी पेंटिंग, फुलकारी, तंजौर– कला के साथ–साथ कथक, भरतनाट्यम, ओडीसी जैसे नृत्य प्रसिद्ध लोकगीत और सूफी संगीत कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाते हैं ।यहां प्रसिद्ध राजस्थानी, पंजाबी, अवधि, दक्षिण भारतीय और मुगलई व्यंजनों का स्वाद लिया जा सकता है ।

सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प महोत्सव प्रतिवर्ष फरवरी माह में हरियाणा राज्य के फरीदाबाद स्थित सूरजकुंड में आयोजित किया जाता है । यह देश का सबसे बड़ा अद्वितीय शिल्प उत्सव है क्योंकि यह भारत की तरह–तरह की कला से जुड़े प्रतिभाशाली शिल्पकार, कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार और बुनकरों की कला और सांस्कृतिक ताने–बाने की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करता है ।

अखिल भारतीय कला एवं शिल्प उत्सव हैदराबाद इस मेले का आयोजन तेलंगाना राज्य के हैदराबाद के माधोपुर शिल्पग्राम में किया जाता है। इसमें राजस्थान, जम्मू कश्मीर उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश उड़ीसा और असम के कलाकारों द्वारा विभिन्न पारंपरिक हथकरघा,हस्त –शिल्प जैसे लकड़ी की नक्काशी,हाथ की ब्लॉक प्रिंटिंग, हाथ की कढ़ाई, जूट उत्पादन, टेराकोटा, नीले मिट्टी के बर्तन, हथकरघा उत्पाद, शॉल, कालीन, पत्थर की नक्काशी आदि का प्रदर्शन किया जाता है ।

राजस्थान अंतरराष्ट्रीय महोत्सव क्षेत्र की स्वदेशी संस्कृति विशेष रूप से पारंपरिक लोक गीतों और नृत्यों के साथ–साथ कला को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के साधन के रूप में इसका आयोजन जोधपुर शहर के मेहरानगढ़ किले मं अक्टूबर की शरद पूर्णिमा को किया जाता है। इस आयोजन का उद्देश्य राजस्थान के लोक संगीत की विरासत को एक मंच पर लाना और विश्व भर के संगीत प्रेमियों को राजस्थानी लोक संगीत से जोड़ना है।

अजंता एलोरा महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष जनवरी माह में महाराष्ट्र की विश्व धरोहर स्थल अजंता और एलोरा की ऐतिहासिक गुफाओं में नृत्य और संगीत के शानदार प्रदर्शन के लिए किया जाता है। यह महोत्सव देश भर के विशिष्ट शास्त्रीय और सांस्कृतिक नृत्य मंडलियों और संगीतकारों को अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है ।

हॉर्नबिल फेस्टिवल नागालैंड की समृद्ध जीवंत देवी संस्कृति की विविधता और सुंदरता को देखने और संरक्षित करने के उद्देश्य से नागालैंड के किस्मा गांव में प्रतिवर्ष दिसंबर के पहले सप्ताह में इसका आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर लोक– नृत्य, कला, संगीत, हस्तशिल्प, हथकरघा, पाक व्यंजन, औषधि पौधे, देसी मूर्तियों आदि का प्रदर्शन और बिक्री की जाती है।

निष्कर्षः भारतीय त्योहार और सांस्कृतिक उत्सव कला और शिल्प के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। यह कला– शिल्प की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित करके इसे जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। यह हमारी पारंपरिक कला–शिल्प और स्थानीय कारीगरों को अपनी कला प्रदर्शित करने के लिए मंच के साथ–साथ पर्यटन में विस्तार करके आय के स्रोत भी प्रदान करते हैं। त्योहार और उत्सव समाज को प्रेम, सौहार्द और एकता का संदेश देते हुए पारंपरिक संस्कृति को संरक्षित करने के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करने में भी सहयोग प्रदान करते हैं इसलिए कहा जा सकता है कि, त्योहारों और सांस्कृतिक उत्सवों का हमारी पारंपरिक कलाओं का संवर्धन और संरक्षण करने में महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- *Sharma,D.D. Uttarakhand ka lok jivan evam sanskriti, Ankit publication Haldwani, B.109*
- *Tripathi,K.N. (2011) Pariksha vani, Baudhik publication Vol.IV*
- *Devi,A & Singh, Y (2025) Living Traditions fairs and festivals as vessels of India's cultural continuity. IJRSS, Vol.6, No.8*
- *Ghari,G & Vaghela, J (2024) Big Indian festivals and their effects on the Indian economy. JETIR, Vol.11.Issue.1*

- https://www.drishtiias.com
- https://ncf.nic.in
- http://www.festivalsfromindia.com
- https://www.holidaymonk.com
- https://rajasthan.ndtv.in
- https://www.patrika.com
- https://www.livehistoryindia.com
- https://livingartlife.com
- https://www.wikipedia.org
- https://www.jagran.com
- https://www.amarujala.com
- https://www.bhaskar.com
- https://www.thetourindia.com
- https://www.quora.com
- https://www.folkartopedia.com
- https://www.indiahandmade.com
- https://utsav.gov.in
- https://cdn.visionias.in
- https://www.ijcrt.org
- https://alokya.com
- https://www.manthanschool.org